ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

कृषि में महिलाओं की स्थिति एवं सहभागिता

Anju Dept. of History, Indra Gandhi University Meerpur, Rewari, Haryana Pin 122502

कृषि में महिलाओं की स्थिति एवं सहभागिता

परिचयः— भारत एक कृषि प्रधान देष है। भारत की अधिकांष जनता गांव में निवास करती है और जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि राष्ट्रीय आय का प्रमुख साधन है। आज भी भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का योगदान 25 फीसदी से अधिक है। भारत की आजादी के बाद कृषि क्षेत्र में अमूल चूल परिवर्तन हुए हैं। 1950–80 के दशकों के दौरान कृषि के आधुनिकीकरण में उल्लेखनीय प्रगति हुई। इन दषकों में वैज्ञानिक शोध पर आधारित तकनीक, विविध प्रकार की सेवाओं तथा भूमि सुधार कीमत निर्धारण एवं वितरण के विकास व विकास की दिषा में कदम उठाए गए। परिणामस्वरूप 1967–68 से 1978–99 के दौरान कृषि उत्पादन 2.8 प्रतिषत की वार्षिक दर से बढा। 1960–70 के दषक में कृषि में हरित क्रान्ति का भी प्रभाव दिखाई देने लगा जिसके परिणामस्वरूप पहले की बजाय उत्पादन ज्यादा बढ़ाने के लिए नई–नई मषीनों, बीजों, सिंचाई के तरीकों का प्रयोग, बैकों द्वारा ऋण देने का प्रावधान, किसानों को प्रषिक्षण देना, आधुनिक औजार आदि का बड़े पैमाने पर प्रयोग होने लगा जिसके परिणामस्वरूप खेती में काम करने के तरीकों में भी बदलाव आना शायद सम्भव था लेकिन इसका ज्यादातर प्रभाव बड़े–बड़े जमींदारों तक अधिक रहा और छोटे किसानों तक कम रहा।

कृषि के कार्य में औरत और पुरूष दोनों की अहम भूमिका रहती है। किसी एक की भूमिका के बिना कार्य कर पाना असम्भव है। कृषि के बारे में हम जब विस्तार से जानने की कोषिष करते हैं तो हम पाते हैं कि प्राचीन काल में सबसे पहले किसी स्त्री द्वारा ही अपनी झोपडी के पास उगे हुए दानों को इकट्ठा किया गया होगा और यह अंदाजा लगाया जाता है कि सबसे पहले दानों की बिजाई का काम औरत द्वारा ही प्रारम्भ किया गया। यही वजह है कि परम्परागत रूप से महिलाओं ने हमेषा ही कृषि के क्षेत्र में महत्ती व विविध भूमिकाएं निभाई हैं। फिर वो चाहे किसान, समकिसान, पारिवारिक, मजदूर, दिहाडी मजदूर या फिर प्रबंध के रूप में।

कृषि में महिलाओं की हिस्सेदारीः—

कृषि कार्य में ग्रामीण महिलाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। फसल की बिजाई से लेकर कटाई तक के कार्यों में महिलाएं लगी रहती हैं। आज भी महिलाएं कृषि क्षेत्र का अनिवार्य भाग है। कृषि के कार्य में लगभग 78 प्रतिषत महिलएं लगी हुई है। कृषि क्षेत्र में महिलाएं और पुरूषों के कार्यों के बंटवारे के रूप में देखा जाता हैं कि शारीरिक श्रम से सम्बंधित काम औरतों को सौंप दिए गए हैं और मषीनों से सम्बंधित व भारवाही पुषओं की सहायता से किए जाने वाले काम सामान्यतः पुरूषों द्वारा ही किए जाते हैं। ग्रामीण परिवेष में आज भी कृषि से जुडी हुई गतिविधियां जो पुरूषों द्वारा जैसे हल जोतना, सिंचाई, बुआई, भूमि को समतलन करना आदि तथा महिलाओं द्वारा निराई, ओसाई, प्रतिरोपित आदि काम किए जाते है। कृषि में आधुनिकीकरण के कारण वर्तमान समय में कृषि कार्य ज्यादातर मषीनों द्वारा किए जाने लगे और कृषि कार्यों में प्रयोग होने वाली मषीनों पर एक तरह से एकाधिकार पुरूषों का ही बना हुआ। अपवाद के तौर पर शायद एकाध ही मषीन औरत द्वारा संचालित की जा रही होगी। यही वजह है कि कृषि कार्यों में मषीनों के प्रयोग से महिलाओं की कोई सार्थक मदद नहीं हो पा रही है क्योंकि महिलाओं द्वारा आज भी परम्परागत रूप से ही कार्य किए जा रहे हैं।

आज मंहगाई और बेरोजगारी के कारण गावों के युवकों का शहर की तरफ पलायन हो रहा है। ऐसे में उन्हें अपना पैतृक कृषि कार्य छोडना पड रहा है। उनकी अनुपस्थिति में उनके पैतृक कार्य की पूर्ण जिम्मेदारी ग्रामीण महिलाओं पर आ जाती है। इसीलिए पिछले कुछ वर्शो से देखा गया है कि लगभग 86 प्रतिषत ग्रामीण महिलाएं कृषि का कार्य कर रही हैं लेकिन इनते बडे स्तर पर काम करने के बावजूद उनका न तो जमीन पर अधिकार है और न ही आज तक किसान का दर्जा मिल पाया है। महिला के नाम जमीन का मालिकाना हक न होने के कारण सरकार द्वारा कृषि से सम्बंधित ऋण, सुविधाएं आदि भी नहीं मिल पाती हैं। आज भी सरकार द्वारा कृषि से सम्बंधित कार्यक्रमों में पुरूष ही केन्द्र में रहता है जैसे–षिक्षण–प्रषिक्षण, षिविर, सुचनाएं, कार्यषालाएं, सेमिनार, विचार गोष्ठियां इत्यादि।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदानः—

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अहम भूमिका है। कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में 18.5 प्रतिषत योगदान है। भारत में कृषि प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों तरह से रोजगार का सषक्त साधन है। इसीलिए कृषि महत्व सहायक क्रियाओं के रोजगार को प्रदान करने की दृष्टि से भी हमें देखना चाहिए जैसे– पषुपालन, वाणिकी, मुर्गीपालन, मछलीपालन इत्यादि । कृषि से भारतीय उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध होता है।

कृषि और सबंद्व क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की संधारणीय प्रगति के विकास में निरंतर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह न केवल 130 करोड भारतीयों की खाद्यान्न आवष्यकताओं को पूरा कर रहा है परंतु विभिन्न पष्चवर्ती और अग्रवर्ती संबद्वनों के जरिए उत्पादन, रोजगार एवं मांग सृजन में भी अहम योगदान दे रहा है। इसके अलावा कृषि क्षेत्र को गरीबी उन्मूलन और अर्थवव्यस्था के विकास में भी विषेष भूमिका अदा कर रहा है।

सारणीः—1, स्थिर कीमतों पर 2004–05 में राज्य जीएसडीपी में कृषि और उससे संबंधित क्षेत्रों की भागीदारी

जी.एस.डी.पी. में कृषि और संबद्ध क्षेत्रकों की भागीदारी	राज्य
30 प्रतिशत और उससे अधिक	अरूणाचल
20–29	आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, जम्मू एवं कश्मीर, मध्य प्रदेश, मणिपुर, नागालैंड, पंजाब, राजस्थान, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश
15–19:	हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, कर्नाटका, मेघालय, मिजोरम, ओडिशा, तेलंगाना, पष्चिम बंगाल
15: से कम	गोवा, गुजरात, केरल, महाराष्ट्र, सिक्किम, उत्तराखंड, तमिलनाडु

स्रोत सी.एस.ओ

राज्य स्तर पर कृषि और उससे संबंधित क्षेत्रों की भागीदारी और प्रगति राष्ट्रीय स्तर के मुकाबले बिल्कुल अलग तस्वीर पेश करती है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर कृषि और उससे संबंधित क्षेत्रों का योगदान 2013–14 में (स्थिर कीमत 2004–05) पर सकल मूल्यवर्धन के परिप्रेक्ष्य में लगभग 14 प्रतिशत था। कई राज्यों ने जी.एस.डी.पी. में कृषि क्षेत्र में कहीं अधिक भागीदारी प्रदर्शित की थी, जो उपरोक्त सारणी में दिखाया गया है। भारत के लगभग 13 राज्य कृषि क्षेत्र से अपनी जी.एस.डी.पी. का 20 प्रतिशत से भी अधिक भाग अर्जित करते हैं और सिर्फ सात राज्य ऐसे हैं जो अपनी जी.एस.डी.पी. के 15 प्रतिशत से भी कम भाग को कृषि से अर्जित करते हैं।

खेतीहर परिवारों में महिलाओं की स्थितिः—

भारत में मजदूरों की जो जमात है उसका एक बडा हिस्सा कृषि एवं उससे जुडे कार्यों में लगा हुआ है। देष में कुल श्रमिकों का लगभग 60 प्रतिषत कृषि एवं 40 प्रतिषत गैर कृषि कार्य में लगा लगा हुआ है। आज देष में प्रत्येक 100 में से 60 श्रमिकों का संबंध कृषि क्षेत्र से है। यदि महिला श्रमिकों की बात की जाए तो उसकी स्थिति पुरूषों की तुलना में और ज्यादा खराब है। प्रतयेक 100 में से 75 महिलाएं कृषि कार्य में लगी हुई हैं। भारतीय ग्रामीण मजदूर परिवारों में कमजोर वर्गो की प्रधानता है। भूमिहीन परिवारों में ज्यादारत मजदूर कृषि क्षेत्र से सम्बंधित होते हैं। जिसको हम खेत मजदूर या खेतीहर मजदूर भी कह सकते हैं। खेत मजदूर की आजीविका मुख्यतः कृषि के कार्यो पर निर्भर रहती है। प्रथम खेतीहर श्रम जांच समिति ने उन व्यक्तियों को खेतीहर मजदूर माना जो साल में अपने काम के कुल दिनों के आधे या आधे से अधिक दिनों तक मजदूरी पर फसलों के उत्पादन का कार्य करते हैं। साथ ही खेती में काम करने वालों के अतिरिक्त उन व्यक्तियों को भी खेतीहर मजदूर माना गया जो खेती से संबंधित कार्यो में मजदूरी करते हैं जैसे– बागवानी, मुर्गीपालन, पषुपालन आदि।

कृषि कार्यो में जिस तरह से खेतीहर मजदूर की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है उसी तरह से मजदूर महिलाओं की भी भूमिका रहती है। कृषि कार्यो में लगी श्रमिक महिला मुख्य रूप से रोपण, छंटाई, फअकना, गहना, कमाई, खाद डालने, जमीन तैयार करना, कटाई करना, अनाज को अलग करना व सफाई करना, पषुओं के लिए चारा लाना व देखरेख करना आदि कृषि से संबंधित कार्य मुख्यतः महिला श्रमिकों द्वारा किए जाते है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति की महिलाओं का योगदान इन कार्यो में अधिक होता है। भारत में लगभग 70 प्रतिषत पुरूष श्रमिक और 87 प्रतिषत महिला श्रमिक अपने भरण पोषण के लिए कृषि व उससे संबंधित व्यवसाय पर निर्भर है।

कृषि कार्यो में महिलाएं और पुरूष दोनों श्रमिक के रूप में काम करते हैं परंतु काम के बदले मिलने वाली मजदूरी में भी भिन्नता देखने को मिलती है। पुरूष द्वारा किए जाने वाले कृषि कार्य के बदले मजदूरी ज्यादा मिलती है और महिला द्वारा किए जाने वाले उसी काम के बदले मजदूरी कम मिलती है। यह भिन्नता आज भी बरकरार है।

सारणीः—2, कृषि से संबंधित कार्यो में पुरूष व महिला को मिलने वाली औसत दैनिक

पारिश्रमिक दर

सल	पुरूष	रूपये	प्रतिषत	महिला	रूपये	प्रतिषत
2007–8	''	100–150	78.0	''	0–50	57.9
2008–9	''	150–200	88.7	''	50–100	66.3
2009–10	''	''	103.9	''	''	80.1
2010–11	''	200–250	124.2	''	''	97.2
2011–12	''	250–300	149.0	''	100–150	117.0
2012–13	''	300–350	17.63	''	''	138.7
2013–14	''	350–400	232.2	''	150–200	18.5

श्रोतः श्रम ब्यूरो

उपरोक्त सारणी दर्षाती है कि भारत में कृषि से संबंधित कार्यो के बदले मिलने वाली पुरूष और महिला की औसत दैनिक मजदूरी दर में भिन्नता साफ दिखाई देती है। 2007–8 में 57.9 प्रतिषत महिलाओं की 0 से 50 रूपये ही औसत पारिश्रमिक दर हैं और 2013–14 में 18.5 प्रतिषत महिलाओं की 150 से 200 रूपये ही औसत पारिश्रमिक दर हैं जबकि 2007–8 में 100 से 150 पुरूषों की 78.0 रूपये औसत पारिश्रमिक दर हैं और 2013–14 में पुरूषों की 350–400 रूपये ही औसत पारिश्रमिक दर हैं।

श्रमिक महिलाएं खेतों में अधिक समय तक काम करती है और काम के साथ –साथ ही घर की पूरी जिम्मेदारी का निर्वाह करती है जिसमें घरेलू कार्यों से लेकर बच्चों, बिमार व्यक्तियों व बुजुर्गों की देखभाल भी मुख्यतः उन्हीं के द्वारा की जाती है।

सुझाव

आज महिलाएं कृषक और श्रमिक के तौर पर कृषि में निर्णायक भूमिका निभा रही है। नए–नए रोजगार की तलाष में ग्रामीण युवकों का शहर की तरफ बढ रहे पलायन की वजह से आने वालें दिनों में महिलाओं की कृषि में भूमिका ओर ज्यादा बढने की सम्भावना है।

- आज महिलाओं को कृषि के कार्यो में पुरूष के बराबर का हिस्सेदार बनाना होगा।

- :कृषि कार्य से संबंधित तमाम कार्यक्रमों में उन्हें प्रमुखता से शामिल करने के लिए विषेष तरह की पहलकदमियां करनी होगी।
- महिलाओं को किसान का दर्जा देना और साथ ही जमीन का मालिकाना हक भी प्रदान करना।
- सरकार द्वारा महिलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विषेष कार्यक्रम चलाना और षिक्षण–प्रषिक्षण, षिविर, सुचनाएं, कार्यषालाएं, सेमिनार, विचार गोश्ठियां इत्यादि में महिलाओं को प्रमुखता से शामिल करना।

संदर्भ

1 यादव सुबह सिंह, यादव डा. मोहनलाल (2007) कृषि अर्थव्यवस्था का उदारीकरण सम्भावनाएं एवं चुनौतियां, सबलाइस पब्लिकेशन, जपपुर, भारत, पृष्ठ संख्या 2
2 रणजीत, (2000), भारतीय में कृषि, राष्ट्र पुस्तक न्यास , भारत, पब्लिकेषन, पृष्ठ संख्या 6
3 वही, पृष्ठ संख्या 7
4 यादव डा. सतेन्द्र, लाल डा. चमन, (2011) कृषि उत्पादों का विकय एवं प्रबंधन, आमेगा पब्लिकषन्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 2
5 गौतम डा. एन.सी,(2010) भारतीय कृषि की समस्याएं, यूनिवर्सिटी पब्लिकेषन, पृष्ठ संख्या 1
6 भारतीय कृषि की स्थिति (2015–16) भारत सरकार कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 1
7 भारतीय कृषि की स्थिति (2015–16) भारत सरकार कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्य 37
8 यादव रवि प्रकाष, दीप रागिनी, राय पूजा, (2010) भारत में महिला श्रमिक, एटलांटिक पबिलषर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा)लि., नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 88
9 त्रिपाठी डा. बद्री बिषाल, (1985), भारतीय कृषि, समसयाएं, विकास एव सम्भावनाएं, किताब महल पब्लिकेषन, पटना, पृष्ठ संख्या 233
10 त्रिपाठी डा. बद्री बिषाल, (1985), भारतीय कृषि, समसयाएं, विकास एव सम्भावनाएं, किताब महल पब्लिकषन, पटना, पृष्ठ संख्या 234
11 त्रिपाठी डा. बद्री बिषाल, (1985), भारतीय कृषि, समसयाएं, विकास एव सम्भावनाएं, किताब महल पब्लिकषन, पटना, पृष्ठ संख्या 235
12 श्रम विभाग, नई दिल्ली
13 देसाई नीरा, ठक्कर उशा, (2009), भारतीय समाज में महिलाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, पब्लिकेषन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 19